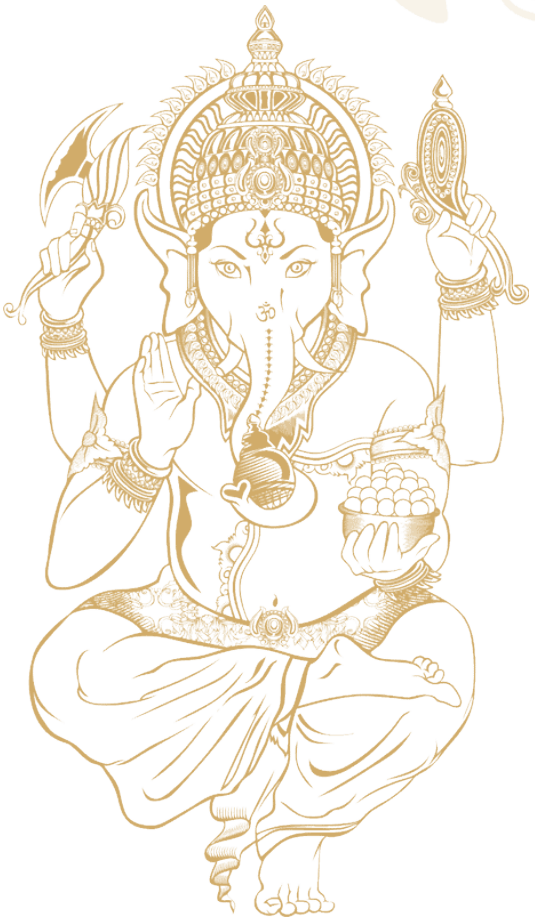

Girl

02 Mar 2026

06:48 PM

Bikaner

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121471401**

तिथि 02/03/2026 **समय** 18:48:00 **वार** सोमवार **स्थान** Bikaner **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 28:01:00 उत्तर **रेखांश** 73:22:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:36:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	04:52:51 घं
वेलान्तर	00:12:09 घं
सूर्योदय	07:00:39 घं
सूर्यास्त	18:37:09 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	फाल्गुन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	15
नक्षत्र	मघा
योग	सुकर्मा
करण	विष्टि

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मी-मीनाक्षी
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

केतु 3वर्ष 8मा 29दि

केतु

02/03/2026
30/11/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	02/03/2026
राहु	18/11/2026
गुरु	25/10/2027
शनि	03/12/2028
बुध	30/11/2029

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 8मा 3दि

भद्रिका

02/03/2026
04/11/2028

	00/00/0000
	02/03/2026
सिद्धा	06/05/2026
संकटा	16/06/2027
मंगला	06/08/2027
पिंगला	15/11/2027
धान्या	15/04/2028
भ्रामरी	04/11/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			20:56:12	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	गुरु	---	0:00			
सूर्य			17:44:27	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	1.35	भ्रातृ	पितृ	साधक
चंद्र			06:11:40	सिंह	मघा	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.28	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	05:44:38	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	चंद्र	सम राशि	1.29	ज्ञाति	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	व	अ	26:54:50	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	0.96	आत्मा	ज्ञाति	वध
गुरु	व		20:59:01	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.29	अमात्य	धन	वध
शुक्र			00:55:37	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.30	कलत्र	कलत्र	वध
शनि			07:41:07	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	सम राशि	1.13	मातृ	आयु	मित्र
राहु			14:45:31	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु			14:45:31	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

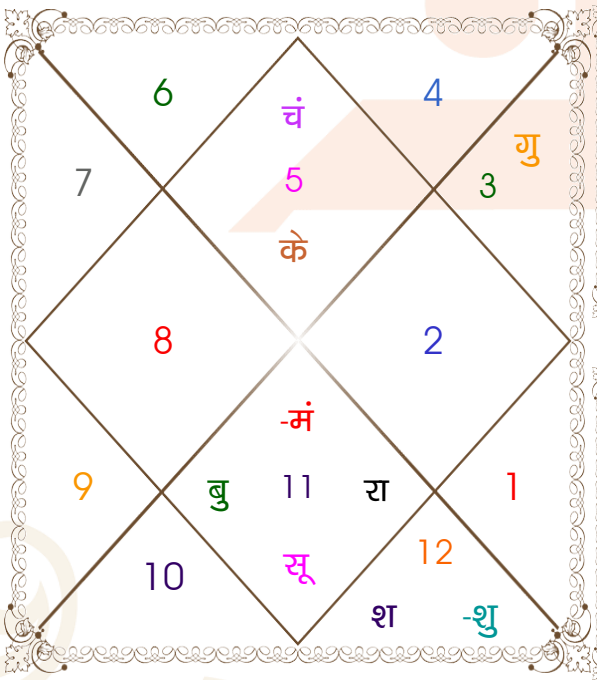

चन्द्र कुंडली

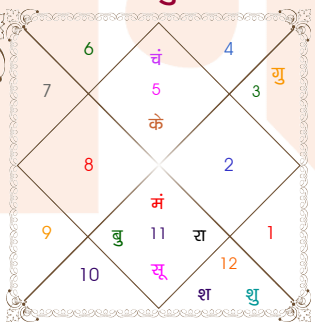

नवमांश कुंडली

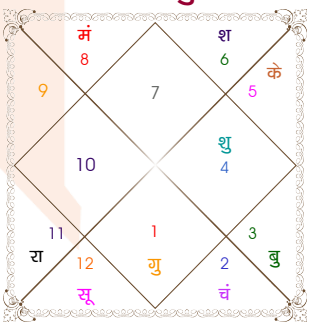

सर्वाष्टकवर्ग

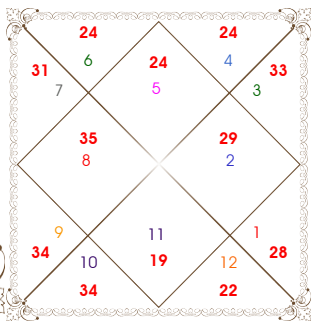

दशमांश कुंडली

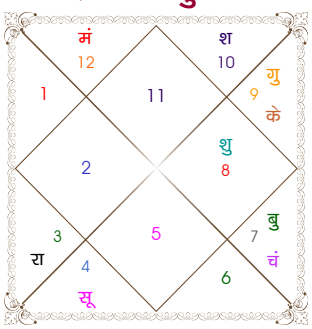

SHREE DAIVAGYA JYOTISH & VASTU
Raipur Chhattisgarh & Bikaner Rajasthan
9509496711
Pandit Bhawani Shankar Pareek

नक्षत्रफल

आप मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि मूषक, वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, वर्ग मूषक तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "मि" या "मी" से प्रारम्भ होगा। यथा मीनाक्षी, मीनू, मीना।

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुई हैं। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न जातक पिता के लिए कष्ट कारी होता हैं। अतः इस नक्षत्र का जन्म समय में ही शास्त्रीय विधि विधान से शान्ति करवा लेनी चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार योग्य विद्वान द्वारा विधि विधान से शान्ति करने पर इसका अरिष्ट दोष प्रभावहीन हो जाता हैं तथा संबंधित जातक सुखपूर्वक रहता हैं।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप आजीवन धन एवं ऐश्वर्य से परिपूर्ण रहेंगी तथा कभी भी इनका अभाव महसूस नही करेंगी। आप सेवकों तथा नौकर चाकरों की स्वामिनी तथा समस्त सुखों का उपभोग करने वाली होंगी। माता पिता तथा देवताओं के प्रति आपका पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही आप हमेशा उद्योग में तत्पर रहेंगी।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

आप मातृ तथा पितृ दोनों पक्षों की सेवा करने वाली होंगी तथा इनके सुख दुःख में हमेशा सहयोग प्रदान करेंगी। आप एक साहस से सम्पन्न महिला होंगी तथा साहसिक कार्यों में आपकी अधिक रूचि रहेगी जिससे आप पुलिस, सेना में कोई उच्च पद प्राप्त कर सकेंगी। साथ ही राज्य सेवा में भी आप तत्पर रहेंगी।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

आप पल प्रतिपल नये रूप परिवर्तन करने में दक्षता प्राप्त करेंगी। उत्सवों में आप अत्याधिक रूचिशील रहेंगी तथा इनके आयोजनों में पूर्ण रूप से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए उद्यत रहेंगी। साथ ही सामान्य जनता की कोई प्रशासिका भी हो सकती हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

मन की कठोरता का प्रदर्शन करने के लिए आप प्रसिद्ध होंगी तथा दया एवं करूणा का प्रदर्शन अल्प मात्रा में ही करेंगी। स्वभाव से भी आप उग्र रहेंगी तथा ज्ञान एवं विद्या की प्राप्ति करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। आप अच्छे कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगी तथा दुष्कर्मों की उपेक्षा करेंगी। शत्रुओं का प्रतिरोध आप साहस तथा दृढ़तापूर्वक करेंगी जिससे की वे आपसे पराजित रहेंगे। साथ ही आप बुद्धिमती भी होंगी। यदा कदा आप अभिमानी वृति का भी प्रदर्शन करेंगी। पुरूषवर्ग को वश में करने में आपको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी तथा समाज से आपको यथोचित आदर सम्मान तथा सहयोग सदैव प्राप्त होता रहेगा।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा

बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से तेज होंगी। आपका मस्तक तथा मुखाकृति भी विशाल होगी। आप की छोटी छोटी तथा पीली आखें होंगी। वनों तथा पर्वतों पर सैर करना आपको रूचिकर लगेगा। आप कभी कभी बिना किसी कारण के भी क्रोधित हो जाएंगी। आप अपने जीवन में तृष्णाओं मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहेंगी। आप के मन में दान देने की भावना भी निहित होगी अतः आप अवसरानुकूल इस प्रवृति का भी प्रदर्शन करती रहेंगी। कभी कभी आपके मन में गर्व की भावना की भी प्रवलता होगी। आप अपने माता पिता सहित सभी बुजुर्गो के प्रति पूर्ण आदर भाव रखेंगी तथा सुख दुःख में उनकी हार्दिक श्रद्धा से सेवा करेंगी। आपकी संतति में पुत्रों की संख्या अल्प रहेगी। आपकी बुद्धि चंचल न होकर स्थिर होगी। अतः समस्त जीवन के कार्यकलापों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आपके पराक्रम को भी सभी लोग स्वीकार करेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोळल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योळर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्यां पुष्ट तथा स्वस्थ होंगी एवं शरीर में रोम भी अल्प मात्रा में होंगे तथा स्वभाव अमर्ष से पूर्ण रहेगा। किसी भी कार्य को करने से पहले आप गले से कोई स्वर अवश्य निकालेंगी। आपका वक्षस्थल विस्तृत सुन्दर तथा दर्शनीय होगा जिसे देखकर अन्य अनायास ही आकर्षित होंगे। आप समाज में अपने प्रभुत्व को पूर्ण रूप से स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही आप हमेशा चारों तरफ से सावधान तथा जागृतावस्था में रहेंगी तथा किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसके विषय में गम्भीरता से सोचेंगी तथा स्थितियों का अवलोकन करने के बाद ही उसे प्रारम्भ करेंगी।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताती क्ष्णोळल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपका हनुभाग मोटा रहेगा तथा मुखाकृति भी सामान्य से बड़ी होगी। आप माता की प्रिय एवं स्नेह की पात्र रहेंगी तथा आप भी उन्हे पूर्ण मान तथा सम्मान प्रदान करेंगी।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोळभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

उदरपूर्ति के लिए किए गये आवश्यक धनार्जन से ही आप पूर्ण सन्तुष्टि तथा शान्ति का अनुभव करेंगी। आपके स्वभाव में क्रोध की मात्रा की भी प्रबलता रहेगी। जंगलों एवं पर्वतों में भ्रमण करने के लिए सदा व्यग्र रहेंगी। आप सेवक तथा बन्धुओं से भी युक्त रहेंगी।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आपका स्वभाव प्रारम्भ से ही क्षमाशीलता से युक्त रहेगा तथा किसी को भी आप दंडित करने की अपेक्षा क्षमा करने में शीघ्रता करेंगी। आपको बिना काम के या निष्क्रिय होकर बैठना अच्छा नहीं लगेगा। आप हर समय कुछ न कुछ कार्य करने में व्यस्त रहेंगी। आप एक जगह में स्थिर होकर नहीं रहेंगी तथा इधर उधर भ्रमण तथा देश विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहेंगी। ठण्ड से आप अधिक व्याकुलता का अनुभव करेंगी। आप विनयशील तथा अच्छे मित्रवर्ग से हमेशा युक्त रहेंगी। समाज से आप पूर्ण मान सम्मान की अधिकारिणी रहेंगी तथा प्रख्यात एवं यशस्वी होंगी लेकिन साथ में कुछ व्यसनों से भी आप युक्त रहेंगी।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें सुन्दर तथा शरीर की बनावट अत्यन्त ही मोहक आकर्षक तथा सौन्दर्य से युक्त रहेंगी। आपकी दृष्टि अत्यन्त ही गंभीर होगी तथा जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में आप सफल रहेंगी।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में जन्म लेने के कारण कभी कभी आपकी प्रवृति अधिक बाते बोलने वाली होंगी। आपमें दया का भाव अल्प मात्रा में ही आपके चित्त में विद्यमान रहेगा। साहसिक कार्यों में आप अधिक लग्नशील रहेंगी तथा इन कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी। साथ ही आप छोटी छोटी बातों में भी शीघ्र उत्तेजित तथा गुस्सा करने वाली होंगी। अपने कार्य सिद्धि के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगी। समाज के अन्य लोगों से आप बात बेबात पर विवाद करेंगी फलस्वरूप अधिकांश लोगों से आपका विरोध रहेगा।

आप उन्माद तथा प्रमेहादि रोगों से भी व्याकुल हो सकती हैं। शारीरिक स्वरूप देखने में सामान्य सुन्दरता से युक्त होगा।कभी कभी अपने वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में जन्म लेने के कारण आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा धनधान्यादि ऐश्वर्य एवं वैभव से सर्वथा सम्पन्न रहेंगी। इनमें से किसी का भी आपको अभाव नहीं रहेगा। अपने कार्य को करने में आप नित्य तत्पर तथा प्रयत्नशील रहेंगी जिससे आपके अन्दर हमेशा सक्रियता का निवास रहेगा। परन्तु आप कभी भी किसी अन्य पर विश्वास नहीं करेंगी। अतः कोई कार्य यदि करवाना पड़े तो अपने समक्ष ही उसे सम्पन्न करवाना अधिक श्रेयस्कर समझेंगी।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोऽप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में

भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृति योग, ववकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि का चन्द्रमा अनिष्ट फल दाता होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा ववकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रय आदि कोई अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों में शारीरिक स्वस्थता तथा सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता हो रही हो व्यापार, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति या अन्य कार्यों में असफलता मिल रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य की उपासना करनी चाहिए तथा प्रातः काल अर्ध्य देना चाहिए एवं रविवार का उपवास भी रखना चाहिए। साथ ही श्रद्धापूर्वक माणिक्य, सोना, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, गेहूं, गुड़ आदि पदार्थो का भी दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप स्वयं या किसी विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।